[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3422

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग

लोकेश वाहने
सहायक प्राध्यापक 'संगीत वाद्य'
शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन

संगीत का सम्बन्ध मधुर ध्वनि से है जिसमें नियमित आंदोलन होते है, वह ध्वनि जो संगीत में प्रयोग की जाती है ''नाद'' कहलाती है। कहने का अर्थ यह हुआ कि संगीतोपयोगी ध्वनि को नाद कहते हैं। नाद ही संगीत का आधार है।

संगीत एक उत्कृष्ट ललित कला है जिसका मुख्य आधार नाद अथवा आवाज है इसी कारण रस कला को नाद ब्रह्म पुकारा गया है। इस कला को हम स्वरों का ऐसा सम्मिश्रण कह सकते हैं जो कलाकार की हृदयगत भावनाओं को मधुर बनाकर दूसरों के सामने प्रकट करता है इसलिए संगीत को हृदय की भाषा तथा हृदयगत भावनाओं को प्रकट करने की भाषा माना जाता हैं अंग्रेज विद्वान रस्किन कहते है, ''अन्तरात्मा का उत्थान तथा उसे कलात्मक आन्नदमय स्वरूप प्रदान करना ही संगीत का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। स्व. रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी इसे सौन्दर्य का साकार एवं सजीव प्रदर्शन माना हैं, इस कला का प्राणीमात्र से घनिष्ठ सम्बन्ध है, मनुष्य ही क्या पशु भी इस पर अपने प्राण न्यौछावर करते हैं संगीत प्राणी मात्र के लिए अमृतरस है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं और नवाचार उसकी महत्वपूर्ण विशेषता है। यही विशेषता नवीनता को जन्म देती है। सारे जगत का विशाल एवं सुंदर परिदृश्य इसका प्रतिफल है। चित्रपट संगीत की चर्च करने के पूर्व हमें हमारे प्राचीनकालीन शास्त्रीय संगीत की महत्ता की चर्चा करना श्रेयकर होगा क्योंकि इसी संगीत ने चित्रपट संगीत की दिशा व दशा का नया मार्ग प्रशस्त किया है।

प्राचीन काल में संगीतज्ञों ने शास्त्रीय संगीत को दो भागों में विभाजित किया था।

1 मार्गी अथवा मार्ग संगीत।
2 देशी संगीत अथवा गान।

1. **मार्गी अथवा मार्ग संगीत** – अति प्राचीन काल में ऋषियों ने जब यह देखा कि संगीत में मन को एकाग्र करने की एक अत्यन्त प्रभावशाली शक्ति है तभी से वे इस कला का प्रयोग परमेश्वर की आराधना के लिए करने लगे। संगीत परमेश्वर प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाने लगा। लोगों का विचार था ऊँ शब्द ही नाद ब्रह्म है। संगीत का उद्देश्य निश्चित करने के बाद संगीतज्ञों ने इसे कड़े नियमों से बाँधने का प्रयत्न किया। भरतमुनि ने इसे नियमबद्ध संगीत को जो ईश्वर प्राप्ति का साधन माना जाता है, मार्गी अथवा मार्ग संगीत कहकर पुकारा।

मार्गी संगीत ब्रह्म जी ने भरत मुनि को सिखाया। भरतमुनि ने शंकर भगवान के समक्ष इसका प्रदर्शन गन्धर्व और अप्सराओं से कराया। इस संगीत को केवल गन्धर्व ही गाया करते थे इसलिये इसे 'गान्धर्व संगीत' भी कहकर पुकारा जाता हैं मार्गी संगीत अचल संगीत माना जाता है क्योंकि उसमें थोड़ा–सा भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। उसके नियम तथा बन्धन अत्यन्त कठोर थे। नियमों का पालन करते हुए परमेश्वर प्राप्ति उसका मुख्य उद्देश्य था तथा लोक रंजन से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। मार्गी संगीत शब्द प्रधान था।

2. **देशी संगीत अथवा गान** – प्राचीनकाल में ऋषियों ने जब यह अनुभव किया कि परमेश्वर प्राप्ति के अतिरिक्त संगीत में जनरंजन की अपूर्व शक्ति है तभी से मार्गी संगीत के अतिरिक्त संगीत का दूसरा रूप प्रचार में आया।

अब संगीत दो भागों में विभाजित हो गया था। पहला संगीत वह था जिसका उद्देश्य परमेश्वर प्राप्ति था, दूसरा संगीत वह था जिसका उद्देश्य जन–मन–रंजन था। वह संगीत जिसका उद्देश्य जन–मन–रंजक करना था, वह देशी संगीत कहलाया। देशी संगीत में लोकरुचि के अनुसार उसमें अनेक परिवर्तन होने लगे, भिन्न–भिन्न प्रांतों में कालानुसार इस संगीत में अंतर आने लगा। विद्वानों का विचार है कि मार्गी संगीत में परिवर्तन करके देशी संगीत की उत्पत्ति हुई। देशी संगीत परिवर्तनशील होने के कारण वेदकालीन संगीत से बिल्कुल भिन्न हो गया। यहाँ तक कि आज जिस देशी संगीत को हम सुनते अथवा गाते

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

है वह सब उसकी परिवर्तनश्शीलता का परिणाम है। प्राचीन समय में देशी संगीत को ''गान'' कहकर पुकारा जाता था। 'संगीत रत्नाकर' नामक पुस्तक में लिखा है –

यतु वाग्गेयकारेण रचितं लक्षणन्वितम्।
देशीरागादिषु प्रोक्तं तद्गानं रंजनंजकम्।।

अर्थात् वाग्गेयकारों ने अपनी बुद्धि से प्राचीन निबद्ध संगीत में परिवर्तन करके एक नये संगीत की रचना की है, जिसे गान अथवा देशी संगीत कहते है।

आधुनिक काल में जो संगीत हम भारत के अनेक प्रान्तो में सुनते हैं इसे देशी संगीत कहा जाता है। इस संगीत कि विशेषता है कि समयानुसार इसमें बराबर परिवर्तन होते है। जन रुचि पर आधारित होने के कारण प्रत्येक प्रान्त में इसका रुप अलग–अलग होता है। इस संगीत के नियम मार्गी संगीत की तरह कड़े नहीं है इसमें स्वतंत्रता भी अधिक है। मार्गी संगीत आजकल प्रचार में नही है क्योंकि प्राचीन काल में ही इसका गायन समाप्त होने लगा था, सारे भारत वर्ष में आजकल देशी संगीत का प्रचार है इसकी दो पद्धतियाँ (हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक) प्रचलित है। संक्षेप में हम मार्गी तथा देशी संगीत का अंतर इस प्रकार समझ सकते है।

मार्गी संगीत ईश्वर निर्मित है तथा इसका उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है। देशी संगीत मानव निर्मित है तथा इसका उद्देश्य जन–मन–रंजन है। मार्गी संगीत अचल है अर्थात् इसमें परिवर्तन नहीं होते। देशी संगीत परिवर्तनशील है। मार्गी कठोर नियमों से बंधा हुआ है। देशी संगीत के नियम अधिक कठोर नहीं है। गायक वादक को स्वतंत्रता है। जनरुचिनुसार नियम बदलते रहते है। मार्गी शब्द प्रधान है और देशी स्वर प्रधान है। भारतीय संगीत को हम दो भागों में बांट सकते है।

शास्त्रीय संगीत (Classical Music)
भाव संगीत (Light Music)

शास्त्रीय संगीत – जो स्वर, ताल, राग, लय आदि नियमों में बांधकर आकर्षक रीति से गाया अथवा बजाया जाता है वह शास्त्रीय संगीत कहलाता है। भाव संगीत का शास्त्रीय संगीत के समान कोई शास्त्र नहीं होता परंतु इस संगीत का नियमित शास्त्र होता है तथा शास्त्र के अनुसार गायन अथवा वादन होता है, नियमित शास्त्र के अनुसार ही इसे गाते अथवा बजाते है इसलिए इसे शास्त्रीय संगीत कहकर पुकारते है।

भाव संगीत – इस संगीत के अंतर्गत ढोलक के गीत, आल्हा, लोरी, भजन,अनेक प्रान्तों में शादी–विवाह त्यौहार आदि विशेष उत्सवों पर गाये जाने वाले गीत, सावन के झूले के गीत, फिल्मी गीत, रेडियो के गीत, भजन आदि आते हैं। इस संगीत से जन साधारण का खूब मनोरंजन होता है और इन गीतों को गाने अथवा समझने के लिये विषेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं पड़ती। इन गीतों में लय, स्वर, तथा काव्य तीनों का आनन्द प्राप्त होता है, इनमें कुछ गीत ऐसे है जिनमें लय का विशेष महत्व है कुछ गीतों में लय के साथ काव्य का काफी महत्व है तथ कुछ गीतों में स्वरों का महत्व अधिक है जैसे – फिल्म संगीत। भाव संगीत में रागों की शुद्धता पर कम ध्यान दिया जाता है।

शास्त्रीय संगीत को हम दो भागों में बांट सकते हैं –

सैद्धांतिक (Theoritical)
व्यवहारिक (Practical)

सैद्धांतिक शास्त्रीय संगीत – इसके अंतर्गत संगीत का सम्पूर्ण शास्त्र आ जाता है। इसमें संगीत के पारिभाषिक शब्द जैसे – नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, थाट, राग, ग्राम, मूर्च्छना, गमक, तान, आलाप इत्यादि आते है। शास्त्रीय संगीत का यह अंग लिखित है और अनेक नियमों में बंधा हुआ होने के कारण बहुत विस्तृत है।

व्यवहारिक शास्त्रीय संगीत – जिस प्रकार शास्त्रीय संगीत का सैद्धांतिक अंग विकसित है उसी प्रकार उसका व्यवहारिक अंग भी प्रबल है। कला का मुख्य उद्देश्य उसकी अभिव्यक्ति अथवा उसको प्रकट करना है। विषेषकर संगीत तो एक ऐसी कला

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

है जिसका प्रत्यक्ष में ही व्यवहार होता हैं शास्त्रीय संगीत के व्यवहारिक अंग में इस गायन के प्रकार, नृत्य अथवा वादन के प्रकार, गायकी, शैली, घराने, ध्वनि का उतार चढ़ाव, आलापचारी, तानें इत्यादि रखते हैं। भारतीय रागों तथा गायन अथवा वादन के शैलियों का क्षेत्र बहुत बड़ा है, इस प्रकार व्यवहारिक अंग अधिक प्रबल है। पुराने समय में संगीतज्ञ पढ़े–लिखे न होने के कारण व्यवहारिक शास्त्रीय संगीत पर ही अधिक ध्यान देते थे।

सिने या चित्रपट संगीत (फिल्म संगीत) ऐसे महान् संगीतज्ञ जो शुद्ध शास्त्रीयता के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष में निपुण व पारंगत होते हुए भी फिल्म संगीत में अपनी विद्वता व कला से अपनी असीमित परिकल्पनाओं व भावनाओं के माध्यम से शास्त्रीय रागों को आधार मानकर आकर्षक, कर्णप्रिय, मधुर धुनों का निर्माण कर जनमानस के हृदय पर सदैव राज किया है। फिल्म संगीत का आधार ही शास्त्रीय संगीत है फिल्म संगीत की मूल विशेषता यह है कि वह सबके लिए हमेशा सुलभ है। जो अपने सरल स्वभाव के कारण लोकजीवन को प्रफुल्लित करने वाला, अंतर्मन को गुदगुदाने वाला, भावनात्मक आनन्द देने वाला, सहजता से जुबान पर चढ़ने वाला, सुरीले रस से सरोबार करने वाला उपादान है। हमारा मानवीय समाज तो संगीत और मनोरंजन दोनों का भूखा होता है क्योंकि उसका समय व्यस्त होता है स्वभावतः चित्रपट संगीत में आत्मानंद का दर्शन कर तृप्त हो जाता है।

वर्तमान में फिल्मों में संगीत देने वाला संगीतकार कहलाता है, गीत लिखने वाला गीतकार कहलाता है, फिल्म को निर्देशित करने वाला निर्देशक तथा फिल्म बनाने वाला फिल्म निर्माता कहलाता है। यह उपाधियाँ उन्हें उनके अपने कार्यों से मिलती है जिन्हें हमारा मानवीय समाज इन्हीं रूपों में स्वीकार करता हैं फिल्म निर्माण में संगीत पक्ष एक ऐसा अध्याय है जो मानव के मन को छू जाता है और आज उसकी सफलता का स्तम्भ है।

शास्त्रीय संगीत व फिल्मी संगीत में रागों को प्राथमिक आधार बनाकर उसे बरतने का तरीका अलग–अलग होता है, राग एक सागर की तरह है, समन्दर की तरह है, बहुत गहरा! साधक रूपी गोताखोर जितनी गहराई में उतरेगा, जायेगा, जाने का प्रयास करेगा, वह उतना ही उस गहराई से, मोती जैसे अनमोल रत्न यानि स्वरों के, सच्चे स्वरों के, बेशकीमती रत्न व खजाना प्राप्त करेगा। यही है हमारी विरासत, संगीत की विरासत, पुरखों की विरासत, संगीतज्ञों की विरासत। जिसे हमें अपनी सच्ची साधना से, ईमानदारी से, अथक परिश्रम से,गुरु की महती कृपा से, आगे भविष्य में लेकर जाना है, उसी शुद्धता के साथ, परिकल्पनाओं की नाजुक पंखुड़ियों में।

जहाँ शास्त्रीय संगीतज्ञ कलाकार राग की बढ़त करते हुए, उसकी भूमिका बांधते हुए, शनैः शनैः दर्शकों के हृदय में, मन में, अपना प्रभाव स्थापित करने लगते हैं वहीं फिल्मी संगीतज्ञ–संगीतकार उसी राग में महज तीन या चार मिनट के अल्प समय में, आकर्षक, कर्णप्रिय, मधुर धुन बनाकर व्यक्ति के जेहन में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते है।

इसका अर्थ यह कतई नही है कि हमारे शास्त्रीय कलाकार रसाभिव्यक्ति में अक्षम है हमारी शास्त्रीय संगीत की शैली अलग है, विद्या अलग है, यहाँ धीरे–धीरे अपने मुकाम पर पहुंचकर रसाभिव्यक्ति व्यक्त करना होता है। अपनी सुदृढ़ परम्पराओं की शैलियों को निरुपित करना होता है, अपनी संगीत साधना को, स्वरों में, रागों में सराबोर करना होता है। तब जाकर एक सम्पूर्ण राग की प्रस्तुति होती है उसमें रस की उत्पत्ति होती है इस संगीत के दर्शक व श्रोता अलग होते है। हमारे दोनों विधाकार अपनी अलग–अलग भूमिकाओं का निर्वहन करते हुए अपनी दोनों विधाओं को अपनी साधना से लोकप्रिय बनाने के लिए तत्पर हैं, संकल्पित हैं, यही संगीत की विशेषता है हमारे जन मानस में। कुछ शास्त्र समझता है कुछ नहीं समझता। जो समझने का प्रयास करता वो शास्त्रीय संगीत के रागों में, स्वरों में, उनकी अलग–अलग शैलियों में खो जाता है, अपनी सुधबुध खो बैठता है– ब्रह्म के समीप पहुंचने का प्रयास करता है वहीं दूसरा वर्ग, जिसे शास्त्र नहीं आता वो लोकधुनों की ध्वनि में, फिल्मी धुनों में मधुर स्वर लहरियों में, बिना अपनी समझ लगाये–आनन्द के झूलों में हिलोरे मारने लगता है– यही है हमारा फिल्मी संगीत जो जन–जन में लोकप्रिय है। दोनों विधाएं (शास्त्रीय संगीत–फिल्मी संगीत) अलग होते हुए भी समाज के अभिन्न अंग है।

फिल्मी संगीतकार फिल्मों में संगीत देते समय–कहानी, गीत व जनमानस का विशेष ध्यान रखते है, अपनी मधुर व सरल धुनों से कर्णप्रियता प्रदान करते हैं।

हमारे फिल्मी जगत के फिल्मी संगीतकारों में शंकर–जयकिषन, खयाम, एस.डी.बर्मन, कल्याणजी–आनन्दजी, लक्ष्मीकान्त–प्यारेलाल, नौशादजी, शिव हरि व मदनमोहन जी का नाम बड़े ही अदब के साथ लिया जाता हैं इन्होंने अपनी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

लोकप्रिय धुनों से पूरे भारत वर्ष के दिलों पर राज किया है, इनके द्वारा निर्मित धुनें आम जुबाँ पर चढ़कर बोलती है। आम आदमी, थकाहारा आदमी, तनावग्रस्त आदमी, समस्याओं से जूझता आदमी, जिंदगी की अंधी दौड़ में भागता आदमी, इनकी कर्णप्रिय धुनों में खो जाता है, ध्वनि में खो जाता है, नाद में खो जाता है, स्वरों में खो जाता ह, उसकी मिठास को अपने अंदर, गहराई तक महसूस करता हैं यही है आम आदमी का संगीत। जिसके तले बैठकर वह थकान मिटाता है तो कहीं अपना अक्स ढूंढ़ता है – कल्पनाओं में ... विचारों में ... निरंतर...।

फिल्मी संगीत के असीमित लोकप्रिय होने का कारण उसका सरल होना है, मधुर होना है। आज वर्तमान युग में तकनीकी संचार माध्यमों ने इतनी तरक्की की है कि संगीत की सारी विधाएँ हमारे गायन कक्ष में टी.वी. ,रेडियो, सी.डी. ,वीडियों आदी के माध्यम से निवास करती है।

जहाँ एक ओर हमारे वरिष्ठ संगीतकार प्रेरणादायक है वहीं नयी पीढ़ी के नये संगीतकार जैसे– (बप्पी लाहिरी, अन्नु मलिक, नदीम–श्रवण, आनंद मिलिंद, जतिन ललित, प्रीतम, विशाल शेखर, विशाल भारद्वाज आदि) बड़े ओजस्वी ढ़ंग से जनमानस पर अपनी नई मधुर धुनों से राज करने को तैयार है, वो तल्लीन हैं, अपनी नवीनतम् धुनों में, मधुरता लिये, रंजकता लिये, मन मस्तिष्क पर छाने के लिये, सदियों तक गुनगुनाने के लिए। ऐसे स्वर, ऐसी रस भरी धुनें, ऐसी मीठी धुनें जो सहायक है हृदय को स्पंदन करने व परम आनन्द के साथ–साथ असीमित रसाभिव्यक्ति के लिए .....।

मैं नवाचार के संगीत के साथ–साथ अनेक विधाओं के साथ सम्बन्ध निरुपित करते हुए उसे समग्र रूप में एक नवीन प्राण शक्ति के रूप में निरूपित करना चाहूंगा। नवाचार सम्पूर्ण जगत के विकास व प्रगति के साथ–साथ किसी भी विधा के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। यदि नवाचार की श्रृंखला अवरूद्ध हो जाए तो मानवीय सृजनात्मकता लुप्तता के कगार पर खड़ी होकर अपनी अंतिम सांसों के लिए प्रतीक्षारत् होगी। नवाचार परिकल्पनाओं व विषयगत विचारों को नवीनता प्रदान करता है, सजीवता प्रदान करता है, दशा को दिशा प्रदान करता है और एक ऐसी महक प्रदान करता है, जिसकी खुशबू से नवीन सृजन व नूतन अपनी अकल्पनीय पराकाष्ठा पर पल्लवित होकर गर्व महसूस करता है।

कुछ अल्प उदाहरणों सहित ऐसी रागाधारित फिल्म संगीत की संगीतबद्ध धुनों का परिचय देना चाहूंगा जिन्होंने अपनी असीम लोकप्रियता से जनमानस के हृदय में अपना विशेष स्थान स्थापित किया है जैसे –

- तू जहाँ–जहाँ चलेगा मेरा साया साथ होगा (रागनंद)
- अगर मुझसे मोहब्बत है तो मुझे अपने गम दे दो (राग दरबारी)
- जाने कहाँ गये वो दिन (राग शिवरंजनी)
- करवटे बदलते रहे सारी रात हम (राग पहाड़ी) इत्यादि

संदर्भ –

1 *संगीत शास्त्र, डॉ. हरिशचंद्र श्रीवास्तव।*
2 *संगीत विशारद, बसंत।*